समाज शास्त्र
बी० ए० II

विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ —

विकास मानव जीवन की आधार शीला है प्रत्येक संस्था उसका आचरण, सभ्यता और संस्कृति का रूप विभिन्न युग की परिस्थितियों के प्रभाव से विकसित होते रहते हैं।

चौहान एवं शर्मा के अनुसार — "समाज शास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते जहा तक हम विकास के अर्थ को जानते है कि उसका अर्थ समाज है। में सम्बन्धो की निरन्तरता में ~~वृद्धि~~ अथवा सामाजिक योग्यताओ शक्तिओ आदि की वृद्धि।"

स्किनर के अनुसार — "विकास एंव निरन्तर एंव क्रमिक प्रक्रिया है"

एस० सी० दुबे — "आधुनिकीकरण और विकास के बीच अन्तर अधिकाधिक धुंधला पड़ता जा रहा है दोनो एक ऐसे बिन्दु पर पहुच गये, दोनो एक दूसरे के स्थान पर लगभग पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त किये जा सकते है।"

दूबे ने मानवीय आवश्यकताओ में छः तरह की आवश्यकताओ की व्याख्या दी है। ये है —

जीवन यापन की आवश्यकताएँ — इसमें पोषाहार, आवास, वस्त्र, जीविका

बिमारी रोकथाम, और उपचार की औषधिया और जीवन तथा सम्पति की रक्षा,

समाजशास्त्रीय आवश्यकताएँ — इसमें समुदायो के निर्माण की क्षमता, समुदाय भावना, एकता में वृद्धि, द्वन्द के प्रभावशाली समाधान और सहमति के निर्माण सामाजिक शासन के विकास संलग्न है।

कल्याण की आवश्यकताए — इसमें दुर्बल वर्ग विकलांग और असहाय लोगो की सहायता के लिए उपाय सम्मिलित है।

अनुकूलन की आवश्यकताएँ — इसमें सामाजिक सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक और भौतिक वातावरण की पडताल के अवसरो के तरीको वांछित परिवर्तनो को लाने उपाय सम्मिलित है

प्रगति की आवश्यकताएँ — इसमें समस्याओ के पूर्वानुमान और उनके समाधान की क्षमता को बढ़ाना

विकास की विशेषताएँ —

विकास की विशेषताए निम्न है।

परिवर्तन की प्रक्रिया — विकास परिवर्तन की एकरेखी प्रक्रिया है जो ऊपर की ओर बढ़ता है समाज के सभी लोगों को लिए सभ्य व उचित जीवन स्तर प्राप्त करना है।

PAGE NO.
DATE: / /

उद्र्वगामी परिवर्तन — विकास परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया है जो आगे की ओर चलायमान है यह समाज में व्यक्तियो के लिए आर्थिक प्रगति अच्छी जीवन स्थितियो में परिवर्तित करता है

नियोजन परिवर्तन — वर्तमान समय में निश्चित योजना के अनुसार प्रयास किया जाता है जिसे नियोजित परिवर्तन कहते है भारत मे पंचवर्षिय योजनाएं इस सन्दर्भ मे महत्वपूर्ण है

अच्छाई के लिए परिवर्तन — जब अच्छाई की दिशा में परिवर्तन हो रहा हो उसे विकास कहा जाता है। इस अर्थ में विकास परिवर्तन की एक उन्नत दिशा को दर्शाता है।

सामूहिकता → विकास की प्रकिया मे सामूहिकता का गुण होता है यह समाज में व्यक्तियो के अच्छी जीवन स्थितियो में परिवर्तन करना है।

सार्वभौमिकता — विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है प्रत्येक व्यक्ति व प्रत्येक समाज से सम्बन्धित रहा है। पिछड़ा समाज या आधुनिक समाज सभी जगह विकास की बात कही जाती है।

प्राचार्य
... महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
...पुर, ताखा, बलिया